रात्रि सभा 26-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा और बरसा याद है?

सारा मदार है रक्षा बन्धन पर। अर्थात पवित्रताके ऊपर। पवित्र गृहस्थ आश्रम भारत में था। अभी अपवित्र है। इसलिए देवी-देवता धर्म की ग्लानी है। पवित्र बनते नहीं हैं। ऐसे समय ही बाप आते हैं। और कहते हैं पावन देवता बनो। पवित्र बनो। कहते भी हैं ऐसे समय कोई पवित्र रह नहीं सकता। बाप भी कहते हैं देवता धर्म की बड़ी ग्लानी कर दी है। अभी भगवान ही आर्डीनेन्स निकालते हैं पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। भारतवासी धर्म-कर्म भ्रष्ट बन गये हैं। इन्हों को ही धर्म की ग्लानी कहा जाता है। देवी-देवता धर्म पवित्र धर्म था। अभी है अपवित्र। तो कहते हैं ऐसे धर्म की ग्लानी समय पवित्रता कहां से आई। घोर कलियुग है ना। इसलिए आदी सनातन देवी देवता धर्म की ग्लानी हो पड़ी है। कितनी मेहनत लगतीहै समझाने में। मानते ही नहीं। समझाया जाता है ऐसे समय ही बाप आते हैं। आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। और कहते हैं पवित्र बनो। कहते भी हैं धर्म की ग्लानीहै। जब देवी देवता धर्म था तो प्युरिटी पीस प्रास्पर्टी थी। अभी तो कोई अपन को देवता नहींसमझते हैं। और ही कहते हैं यह देवतारं भी तो विकारी थे। भारत ही पूज्य था भारत ही पुजारी बना हैं। गीत भी बनाते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। ऐसे2ऐसी संस्थारं हैं जिनकी हैडस फिमेल बहुत हैं। सेवा के लिए। जिसको सोसल वर्करस कहते हैं। वास्तव में पवित्र बनाने की सेवा तो कोई करते ही नहीं। और ही बहुत ऐसी धर्मग्लानी समय पवित्र कहां से आवेंगे। तो माताओं को खड़ा होना चाहिए नेपाल आद के तरफ पवित्र बन सके। बड़ा मुश्किल है। नेपाल का महेन्दर जो है वह तो पवित्रता को भी नहीं मानेंगे। महान पतित हैं। बड़े आदमियों केतकदीर में न है। तुम सुनावेंगे देवतारं कैसे पवित्र थे। यहां कितने पतित बन पड़े हैं। भारत का क्या बुरा हाल हो गया है। अभी बाप कहते हैं पवित्र बनो। पवित्र रहने में ही मुसीबत पड़ती है। माया शिवालय घड़ी2 भूला देती है। प्रतिज्ञा करते हैं बाबा कहते हैंखबरदार रहना। माया एक ही थप्पर से गिरा देगी। गोद लेकर थप्पर खाया तो चकनाचूर हो जावेंगे। पवित्रता में रहना बड़ा ही मुश्किल है। इसलिए गन्धर्वी विवाह की रसम रखी है। परन्तु बात मत पूछो। ऐसे समय बाप को आकर पवित्र जरूर बनाना है। मौत भी सामने है। श्रीमत पर चलन्ती तो विजयन्ति। नहीं तो विनश्यन्ति। मौत तो खड़ा है। बच्चों के अन्दर में सफाई चाहिए पवित्रता की। दैवी गुणों की। अपने को जानना है। जांच करनी है हमारी चलन देवताओं जैसी है। आसुरी काम तो नहीं होता है। ईश्वरीय दरबार में कब झूठ न बोलना चाहिए। छिपाना न चाहिए। नहीं तो सौगुणा हो जावेगा। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। पाप-आत्माओं को पुण्यात्मा बनाने में। फिर भी बाप कहते हैं कल्प2 आता हूं पावन बनाकर ही जाता हूं। बन्धन भी किसम2 के हैं। बच्चे भी आजकल के रोगी हैं। जिनको छोड़कर कहां जाये। जैसे बाप को भारत पर रहम पड़ता है तो बच्चों को रहम आना चाहिए। भारत मी महिमा करते हैं ना। भारत हमारा ऐसा ऊंच है। ऐसे2हम करेंगे। आधा कल्प का वैश्यालय पवना रौरव नर्क है। अच्छे2 बच्चों की भी हालत बहुत बुरी है। जब भारत विषस बन जाती है तो बाप आकर वायसलेस बनाते हैं। और कोई की ताकत नहीं। उन्हों को ही पतित पावन कह बुलाते हैं। पावन बनने का नाम से माया ही खराब हो जाता है। वह तो आशरा बैठे हैं बच्चों की शादी करावें। गठर में डालें। लाखों रुपा खर्च करते हैं। अखबार में भी जावे। भगवानवाच बड़े बड़ आदमी लाखों रुपया खर्च करते हैं बच्चों को गठर में, विषय वैतरणी नदी में ढकेलने। अब भगवान कहते हैं काम को को जीतो जगत जीत बनो। काम के कारण आधा कल्प पापात्मा बने हो। वह पाप कट जाये योग से तब तुम पावन दुनिया के मालिक बन सकते हो। वह समझते हैं ब्रहमाकुमारियां घर फिरती हैं। बहन-भाई बनाती हैं। अब तो बाप कहते हैं भाई2 समझो। आंखें बड़ी धोखेबाज है। उनकी सम्भाल करो। आंखों ऐसी हैंचुहरा छीछी बना देती है। बाप को याद करते रहो। तो पावन बन जावेंगे। नहीं तो मुफ्त पद भ्रष्ट होगा। जाकर जन्म-जन्मान्तर कल्प-कल्पान्तर दास दासियां बनेंगे। गफलत के कारण घाटा बहुत पड़ता है। रूहानी सर्विस के लिए फिमेल्स बहुत चाहिए। जिसमानी सर्विस छोड़ रूहानी करना है। बड़े आदमी के लिए बड़ी चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।